कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 03 जून, 2025

तिल की बुवाई कब और कैसे करें? जानें सही समय और तापमान

नीरज कुमार[1*], पिंकी देवी यादव[2], चेतन कुमार दौतानिया[3] और गीतम सिंह[4]

[1]आर एस एम पी जी कॉलेज धामपुर बिजनौर

[2, 3]राजकीय कृषि महाविद्यालय टोडाभीम करौली

[4]माधव यूनिवर्सिटी सिरोही

***E-mail: neerajkumar32598@gmail.com**

तिल एक ऐसी फसल है जो कम पानी, कम लागत और कम देखभाल में भी अच्छी उपज दे सकती है- बशर्ते इसे सही समय और सही तापमान में बोया जाए भारत के अलग-अलग हिस्सों में तिल की बुवाई का समय और तरीका अलग-अलग होता है, जो वहां की जलवायु और मिट्टी पर निर्भर करता है। यदि आप तिल की खेती से बेहतर उत्पादन और मुनाफा पाना चाहते हैं, तो इसकी बुवाई की सही जानकारी होना बेहद ज़रूरी है।

ऋतु एवं जलवायु

तिल की खेती लगभग सभी राज्यों में बड़े या छोटे क्षेत्रों में की जाती है और इसे 1200 मीटर की ऊँचाई तक उगाया जा सकता है। इस फसल को अपने जीवन चक्र के दौरान उच्च तापमान की आवश्यकता होती है, जिसमें इष्टतम तापमान 25-35 डिग्री सेल्सियस के बीच होता है। यदि तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो और गर्म हवाएँ चलें, तो तेल की मात्रा कम हो जाती है वहीं, यदि तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से अधिक या 15 डिग्री सेल्सियस से कम हो, तो उपज में भारी कमी आती है। तिल शुष्क और अर्ध-शुष्क उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में खरीफ मौसम में और ठंडे क्षेत्रों में रबी या ग्रीष्म मौसम में उगाया जाता है। यह पश्चिमी, मध्य, पूर्वी और दक्षिणी भारत के अर्ध-शुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों, जिसमें निचला हिमालय भी शामिल है, के लिए उपयुक्त है।

तिल की किस्में

उत्तरप्रदेश:- टी-13, शेखर (टी-78), कृष्णा।
मध्य प्रदेश:- जे.टी.-21, टी.जे.टी.-1, आर.टी.-127।
गुजरात:-जी. तिल-1, जी. तिल-2, गुजरात तिल-10।
राजस्थान:- आरटी-46, 103, 125, 127, 346, 351, आरटी-54 (सफेद बीज, हल्के भूरे रंग का बीज)।
आंध्र प्रदेश / तेलंगाना:- वाय. एल.एम.-11, श्वेता तिल, विनायक।

तमिलनाडु:-टी.एम.वी.-3, वी.आर.आई.-1, सी.ओ.-1।
बिहार:-कृष्णा तिल, बिहार तिल-1, राज तिल-1।
महाराष्ट्र:-जे.एल.टी.-7, फुले तिल-1, एक.टी.-64।
पश्चिम बंगाल: रामा, तिलोत्तम, डब्ल्यू.बी.एस.टी.-5।
झारखंड / ओडिशा:-उमा, वी. आर. आई.-2, सावित्री।
छत्तीसगढ़: रायपुर तिल-1, जे.टी.-55, पी.आर.ए.-1।
हरियाणा / पंजाब:-एच.टी.-1, पंजाब तिल-1।

मिट्टी

तिल को विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, लेकिन अच्छी जल निकासी वाली हल्की से मध्यम बनावट वाली मिट्टी इसके लिए सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी का पीएच मान 5.5 से 8.0 के बीच होना चाहिए, क्योंकि अम्लीय या अधिक क्षारीय मिट्टी तिल की खेती के लिए अनुपयुक्त होती है।

बीज दर

तिल की बुवाई के लिए 5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की बीज दर पर्याप्त होती है, जो आवश्यक पौध संख्या प्राप्त करने में सहायक है।

बुवाई

तिल की बुवाई से पहले बीज जनित रोगों की रोकथाम के लिए बीज को बाविस्टिन 2.0 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करना चाहिए। यदि जीवाणुजनित पत्ती धब्बा रोग की समस्या हो, तो बीज को बोने से पहले एग्रीमाइसिन-100 के 0.025% घोल में 30 मिनट तक भिगोना चाहिए। भूमि की तैयारी के लिए मिट्टी को 2-4 बार जोतकर और ढेले तोड़कर अच्छी तरह से तैयार करना आवश्यक है। बीज को समान रूप से फैलाने के लिए इसे रेत, सूखी मिट्टी या अच्छी तरह छनी हुई गोबर की खाद के साथ 1:20 के अनुपात में मिलाया जाता है। इसके बाद हैरो से काम करें, और लकड़ी के तख्ते से दबाकर बीज को मिट्टी में समाहित करें ऊँची भूमि पर 100-110 दिनों की अवधि वाली किस्में और निचली भूमि पर 80-99 दिनों की अवधि वाली किस्में चुननी चाहिए।

बुवाई का समय और अंतराल

राजस्थान में खरीफ ऋतु में जून के अंत से जुलाई के प्रारंभ तक और 30 x 15 cm अंतराल उपयुक्त है।

पौधों का संरक्षण

फिलोडी से प्रभावित पौधों को हटाकर नष्ट कर दें। प्रभावित पौधों के बीजों का उपयोग बुवाई के लिए न करें। पत्ती और फली की इल्ली के नियंत्रण के लिए, प्रभावित पत्तियों और टहनियों को हटा दें, और 10 प्रतिशत कार्बेरिल का छिड़काव करें। एजाडिरेक्टिन 0.03 प्रतिशत की 5 मिली मात्रा प्रति लीटर की दर से 7वें और 20वें दिन छिड़काव करने तथा उसके बाद आवश्यकतानुसार छिड़काव करने से पत्ती और फली की इल्ली, फली छेदक कीट तथा फाइलोडी कीट के प्रकोप को नियंत्रित किया जा सकता है। गॉल फ्लाई के नियंत्रण के लिए 0.2 प्रतिशत कार्बेरिल का निवारक छिड़काव करें। पत्ती मरोड रोग के नियंत्रण के लिए रोग प्रभावित तिल के पौधों के साथ-साथ रोगग्रस्म सहवर्ती पौधों जैसे मिर्च, टमाटर और ज़िन्निया को हटाकर नष्ट कर दें।